"भारतीय सौन्दर्यशास्त्र विमर्श"

राष्ट्रीय संगोष्ठी की विस्तृत रूपरेखा

राजस्थान संस्कृत अकादमी के सहयोग से संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर हिन्दी विभाग, दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा "**भारतीय सौन्दर्यशास्त्र विमर्श**" विषय पर **दिनांक 27–28 अक्टूबर 2015** को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

भारतीय साहित्य चिंतन में सौन्दर्य महत्त्वपूर्ण अवधारणा के रूप में देखा और समझा जाता रहा है। भरतमुनि (नाट्यशास्त्र), नन्दिकेश्वर (अभिनयदर्पण), लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, भट्टतौत (काव्यकौतुक) आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक) अभिनवगुप्त (तन्त्रालोक, ध्वन्यालोक लोचन, अभिनवभारती), कुन्तक (वक्रोक्तिजीवित) क्षेमेन्द्र (औचित्यविचारचर्चा), वामन (काव्यालंकारसूत्र) पंडितराज जगन्नाथ (रसगंगाधर) आदि संस्कृत साहित्य–शास्त्रियों ने साहित्य के स्वरूप का विवेचन करते हुए सौन्दर्य पर पर्याप्त विचार किया है। भारतीय परम्परा में 'सौन्दर्य पर एकांतिक शास्त्रीय चिन्तन उपलब्ध नहीं होता, तथापि काव्य से 'आस्वाद' और 'सौन्दर्य' का अनिवार्य सम्बन्ध होने के कारण प्रकारान्तर से इन पर प्रकीर्णक अथवा व्यवस्थित चर्चा उपलब्ध होती है।

विज्ञान केन्द्रित वर्तमान दौर में मनुष्य के सोच में परिवर्तन आया है। उसमें भावना, संवेदना, नैतिकता एवं अन्य जीवन–मूल्यों के प्रति सजगता कम हो रही है। ऐसे में 'सौन्दर्य विमर्श' जैसे विषय पर चर्चा करना नितान्त आवश्यक और उपयोगी हो जाता है। इसकी पुष्टि वर्तमानकालीन भारतीय तथा पाश्चात्य–काव्य–सौन्दर्य चिंतन की परम्परा से की जा सकती है। सौन्दर्य का परिणाम आनन्दमूलक होता है और आनन्द मांगलिक भी है। प्लेटो की दृष्टि में भी सुंदर वही है, जो आनन्दप्रद है और जो इच्छातर्पक होते हुए भी परिणाम में अत्यन्त मांगलिक है। यही सम्भवतः बहुप्रयुक्त "सत्यं शिवं सुन्दरम्" के मूल में भी है।

भारतीय दृष्टि सौन्दर्य को आत्मनिष्ठ व्यापार के रूप में देखती है। 'सौन्दर्य' के भारतीय परम्परा में अनेक पर्याय भी परिलक्षित होते हैं, कहीं उसे लावण्य कहा गया है, कहीं रमणीय, जिनकी व्याख्या आत्मनिष्ठता से आगे की यात्रा द्वारा संभव है।

सौन्दर्य का एक पक्ष संस्कृति भी है। जयशंकर प्रसाद संस्कृति को सौन्दर्यबोध के विकसित होने की मौलिक चेष्टा कहते हैं। भारतीय कला–बोध की सारी परम्पराएँ और कला–प्रयोग की समस्त विधाएँ अपनी चिरन्तन इतिहास यात्रा में सौन्दर्य की साधना में प्रवृत्त रही हैं।

भारतीय चिंतन में सौन्दर्य साहित्य कला एवं दर्शन से सम्बद्ध रहा है। 20वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कला चिन्तक एवं सौन्दर्यशास्त्री आनन्द कुमारस्वामी का चिंतन, कला, साहित्य व दर्शन के पारस्परिक संबंध पर विचार करते हुए सौन्दर्यबोध का संधान करता है।

भारतीय सौन्दर्य चिंतन की परम्परा बीसवीं शताब्दी में गोविन्द चन्द्र पाण्डे (सौन्दर्यदर्शन–विमर्श) हिन्दी के प्रसिद्ध समालोचक रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय एवं नगेन्द्र आदि आचार्यों में देखने को मिलती है। बीसवीं शती के मनीषी विद्वान् के.सी. पाण्डेय, वी. राघवन, वासुदेव शरण अग्रवाल एवं सुरेन्द्र कुमार बारलिंगे आदि का भी इसमें अप्रतिम योगदान है।

इस व्यापक सौन्दर्य चिन्तन पर स्रोत एवं परम्परा की दृष्टि से विमर्श की आवश्यकता है। इस उपनिषद् का यह मूल प्रयोजन है।

निम्न बिन्दु चिन्तन का केन्द्र होंगें –

- लोक कल्याण हेतु सौन्दर्य की शिवरूपता
- रसानुभूति एवं सौन्दर्य बोध
- नाटक में कल्पना एवं भावबोध
- काव्य में शब्द एवं शब्दार्थगत सौन्दर्य
- साहित्य एवं अन्य कलाओं में सौन्दर्य निरूपण के सिद्धान्त
- कलाओं में सौन्दर्य के विविध आयाम
- सादृश्य विधान एवं अपूर्वता
- वैदिक, जैन एवं बौद्ध परम्पराओं में प्रतिपादित सौन्दर्य दृष्टि
- वस्तु जगत् और कला जगत् में सौन्दर्य बोध
- संस्कृत प्राकृत, हिन्दी साहित्य में सौन्दर्य बोध
- पाश्चात्य परम्परा में सौन्दर्य विमर्श
- नीतिशास्त्र में सौन्दर्य दृष्टि
- भक्तिमार्ग में अपने सेव्य के निरूपण में सौन्दर्य चिन्तन
- सौन्दर्यबोध की मूल्यमीमांसा
- सौन्दर्य एवं मनोरंजकता
- सौन्दर्य एवं सामाजिक प्रभाव

अपना आत्मवृत्त, आलेख–सार तथा आगमन की सूचना दिनांक 15.10. 2015 तक अवश्य भेज दें। पूर्ण आलेख सॉफ्ट कापी में दिनांक 20.10.2015 तक (sanskritseminar2014@gmail.com) पर भेज दें। इससे कार्यक्रम को व्यवस्थित किया जा सकेगा। संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों में से चयनित आलेखों को संगोष्ठी के पश्चात् प्रकाशित करने की योजना है। शोधपत्र हिन्दी (देवलिस, कृतिदेव, चाणक्य फोंट में), संस्कृत या अंग्रेजी में लिखा जा सकता है।

संगोष्ठी दिनांक – दिनांक 27–28 अक्टूबर 2015
संगोष्ठी स्थान – संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
सम्पर्क सूत्र – विभाग – 0141–2711071–2701
प्रो. बीना अग्रवाल– संयोजिका एवं अध्यक्ष– 09414442037
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद– आयोजन सचिव– 09413970601

"भारतीय सौन्दर्यशास्त्र विमर्श"

NATIONAL SANSKRIT CONFERENCE

(27-28 OCTOBER, 2015)

DEPARTMENT OF SANSKRIT, UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR

REGISTRATION FORM

Name of the participant: Prof./Dr/Mrs./Ms.....

Designation:..... Age :.....yrs. Nationality:.....

Institution:.....

Full mailing address:..... ... ...

..... Pin Code.....

Telephone No. (With STD/ISD Code):

Resi.....Office.....

Mobile.....Fax No.....E-mail.....

Local Contact Address and Local Phone No. (if available).....

.....

.....

Title of the research paper .....

.....

Date of Journey and Time.....

Residence Facility : Yes/No .....

Signature of Participant

Dated .....